“भारतीय समाज मेंसामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के सन्दर्भ मेंशिक्षा के प्रति माता-पिताकेदृष्टिकोणकाअध्ययन ”

“AStudy of the attitude of parents towards education in-terms of Socio-Economic Empowerment in Indian Society”

आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय
गाँधी विद्यामंदिर, सरदारशहर, चुरू (राजस्थान)

शिक्षा संकाय में
डॉक्टर ऑफ़ फिलोसोफी की उपाधि मेंपंजीकरण हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रारुप

शोधकर्त्री:-शशी वर्मा

निर्देशिका
डा.(श्रीमती) सुदेश शर्मा
रीडर
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर (राजस्थान)

वर्ष 2015-2016

1. शोधकर्त्री का नाम : श्रीमती शशी वर्मा

2. अध्ययन का स्थान : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षणमहाविद्यालय,
गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चुरू,
(राजस्थान)

3. शोध का शीर्षक : "भारतीय समाज में सामाजिक - आर्थिक सशक्तिकरणके सन्दर्भ मेंशिक्षा के प्रति माता-पिताकेदृष्टिकोणकाअध्ययन "

"AStudy of the attitude of parents towards education in-terms ofSocio-Economic Empowerment in Indian Society"

4. अध्ययन काक्षेत्र : शिक्षा - दर्शन

5. **<u>अध्ययन का उद्देश्य</u>**:-

<u>प्रस्तावना</u>:-

भारतीय समाज में विवाह एक अभिन्न अंग है तथा विवाह के उपरांतपतिपत्निकीयही चाहत होती है कि उनके स्वस्थ एवं मेधावीबालक का जन्महो,पश्चात जिस दिनसे एक बालक के बीज के प्रत्यारोपण माता के गर्भ में होता है उसी समय से माता - पिता की सोच अपने बच्चे के प्रति विकसित होना शुरू हो जाती है औरमाता - पिता यह भी सोचते है कि जिस तरह के विचार गर्भावस्था के समय मनमें आयेंगे बच्चे की सोच उसी और अग्रसर होगी |

बच्चेकी प्रथम गुरु उसकी माता होती है एवं संस्कार काउद्गमस्थल परिवार होताहैजिसमें उसके परिवार कीभूमिका का बहुत बड़ा योगदानहोता हैचाहे वह आर्थिक रूप सेसक्षमया कमजोर हो इसका कोई विशेष प्रभाव बच्चे के जन्मके समय नहीं होता है |

बालक की शिक्षा व उसके विकास का एक प्रमुख कारण उसका सामाजिक आर्थिक एवम् शैक्षिकपरिवेश भी है | माता - पिता के आर्थिक रूपसे सशक्त होने का बालक के शैक्षिक विकास पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है | जिसबालक को अपने परिवार सेउचित प्रेम सहयोग व सहानुभूति व साधनसुविधायेंमिलती है, वह सरलतापूर्वक समाज में मिलजुल सकता है उसको अपने विचारों को अभिव्यक्तकरने की पूर्ण स्वतंत्रतामिलती है और साथ ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी इससे प्रभावित होती है |

माता - पिता द्वारा सन्तान के प्रति अभिव्यक्त प्रेम विभिन्नरूपएवम्मात्रा में पाया जाता है |सभीमाता - पिता अपनी सन्तान के प्रति एक ही मात्रा में अपना प्यार प्रदर्शित नहीं करते| कुछपरिवारों में बालक के प्रति माँ बाप में अगाध प्रेम होता है तो कुछ में कमकिन्तु कुछ परिवारों में अधिक सन्तान, कम आय, शैक्षिक पिछड़ापन इत्यादि कारणों से बालक को परिवार से उचित प्रेम व साधन सुविधायुक्त वातावरण नहीं मिलपाता| बालकजिस प्रेम को परिवार तथा समाज से प्राप्त करता है | उसकाउसकेजीवन पर अत्यंतमहत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है | इसी के द्वारा उसके व्यक्तित्व का संतुलित और सर्वाधिकविकास होता है | जिसके लिए बालक की पृष्ठभूमि अर्थात उसकाघर, परिवार, समाज,सहपाठी,संस्कृतिवमाता - पिता कीआर्थिकवशैक्षिकउपलब्धि काहोनाआवश्यकहैइनसबमेंभीपरिवारजहाँकीबालकजन्मसेहीसंस्कारग्रहणकरताहैवउचि तशिक्षाप्राप्तकरताहै, उसके विकास को प्रभावित करता है |

किसी भी सभ्यता के विकास में सर्वाधिक योगदानसदैव शिक्षा का ही रहाहै| शिक्षा प्राप्ति केबाद ही मनुष्य विद्वान् बनता हें और वेदों में लिखा भी है

“विद्वान् सर्वत्रपूजन्यते”

भारतीयसभ्यता कीउन्नति में वेदों एवं उपनिषद का बहुत बड़ा योगदान रहा है |

शिक्षाजीवनपर्यंतचलनेवालीअनवरतप्रक्रियाहै| शिक्षाहीजीवनहैऔरजीवनहीशिक्षा| बालकइससमाजमेंसामाजिकसदस्यों, प्राकृतिकवातावरण, पशुपक्षीजीव जन्तु आदिसे जो कुछ भी अनुभव के रूप में ग्रहण करता है वह भी शिक्षा है |

शिक्षा वह है जो मानव को अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर अग्रसित करती है |

महात्मा गाँधी के अनुसार : -

“शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट विकास करना है |”

आज के इस शैक्षिक युग में माता - पिता उतना जागरूक नहीं है जितना वर्तमान में आवश्यक हो गया है | इसी प्रकार शिक्षक के दायित्वमेंभी कमी दिखाई दे रही है | उससे भी गंभीर समस्या वर्तमान में माता - पिता एव बच्चों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध व संवाद के अभाव भी प्रतीतहो रहा है |

कोमल, तरल,संवेदनशील पावन मनवाला बालक कच्ची मिट्टी की तरह लचीला होता है | उसे जिस ढ़ाचे में ढालेंव उसी ढ़ाचे में ढल जाता है| उससे राम की मूर्ति भी रची जा सकती है और रावण का पुतला भी गढ़ा जा सकता है| यहनिर्भर करता है उन हाथों पर जो उसे रचते है इस दृष्टी से बालक का विकास, संस्कार करने वाले हाथोंपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है|

एक कहावत भी है कि जो हाथ बालक का पालना झुलाते है, वे दुनिया पर राज करते है | इसके उदाहरण भारत में शकुन्तला और जीजाबाई तथा अन्य कई मातायें है | माताओं के हाथ में बालक के सँवारने संस्कारने की बड़ी जिम्मेदारी है | येहाथ ही बालक का भविष्य संवारते है |

भविष्य सँवारने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है | महाभारत में कहा है : -

“नास्ति विद्या समं चक्षु“

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं | शिक्षा तीसरा नेत्र है | सही शिक्षा प्राप्त मानव प्रज्ञावान बन सकता है | युवकों की शिक्षा पर ही देश का भाग्य आधारित है |

इसदृष्टि से बालक की सही शिक्षा उसका परिवार समाज और राष्ट्र के भविष्य के लिए ही नहीं अपितु इस वैश्वीकरण के युग में विश्व के लिए भी अपरिहार्य है | शिक्षा बिना मानव, मानव नहीं पशु है अत: हरमाता - पिता के लिए परिवार, समाज, राष्ट्र व मानव समाज का प्रमुख कर्त्तव्य है की हर बालक को सही शिक्षा मिले |

विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर तक आने में विकास के एक स्तर को पार कर चुका होता है| प्राथमिकएवम्माध्यमिक स्तर के पश्चात विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओ में प्रवेश करता है | यह काल बालक की किशोरावस्था का काल होता है | येहीकाल बालक के भविष्य को निर्धारित करने मेंमहत्वपूर्णभूमिका का निर्वाह करता है | इसअवस्था में सीखने की प्रवृतिबढ़ने लगती है | निरीक्षण शक्ति तथाबुद्धि का उच्च विकास हो जाता है| कल्पना की अधिकता के कारण नव किशोर कल्पना जगत में विचरण करने लगता है | और दिवास्वप्न देखने लगता है , आत्म प्रकाशन की प्रवृतिबहुत तीव्र हो जाती है |

बालकइस समय स्वतन्त्र रहना पसंद करता है | कोईभी बात तर्क की कसौटी पर कसकर मानता है | सुक्ष्मविचारसमझने की योग्यता आ जाती है |

इस अध्ययन की प्रासंगिकता इंगित करने के लिए विशेषसंदर्भ में राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा और सीखने के लिए उनके परिवार कीशैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति की भूमिका के उपभोग पर विचार किया गया है | बच्चे की शिक्षा के प्रति माता-पिता का सकारात्मक दृष्टिकोणस्कूल में उपस्थिति और बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण है |स्कूली शिक्षा और शिक्षा के प्रति अनुकूल रवैया बच्चों के वर्तमान और भविष्य के अध्ययनों में माता-पिता की भागीदारी को बढ़ाता है | अशिक्षित वकमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति केमाता-पिता का रवैयाबच्चों की शिक्षापर प्रतिकूल प्रभाव डालता है |

वर्तमानअध्ययन मेंग्रामीणमाता-पिता, आज सरकार के प्रयत्नों और पहल के कारणशिक्षा के मूल्यों के बारे में जागरूकता बढ़ा कर बच्चों की शिक्षा की दिशा में एक सकारात्मक और अनुकूल रवैया दिखा सकतेहैं |

<u>शोधके उद्देश्य</u>: -

किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसको करने का कारण निर्धारण करना हीउस कार्य का उद्देश्य कहलाता है | अनुसन्धान का कार्य भी अपने निश्चित उद्देश्यो कोलेकर आगे बढता है | इसीतथ्य को ध्यान में रखते हुए अनुसन्धान के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए है |

a. माध्यमिक स्तर मेंअध्ययनरतविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर माता – पिता के सामाजिक - आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना |

b. माध्यमिक स्तर मेंअध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को ज्ञात करना |

c. माध्यमिक स्तर मेंअध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों केमार्ग में आने वाली कठिनाइयों (समस्याओ) काअध्ययनकरना |

d. सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरतछात्रछात्राओ की शैक्षिक उपलब्धियों पर माता – पिता केशैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना |

e. माध्यमिक स्तर मेंअध्ययनरतछात्रछात्राओ कीसामाजिक–आर्थिक स्तरानुसार शैक्षिक उपलब्धियों के विभिन्न स्तरों का विश्लेषण करना |

शोधकथन: -

"भारतीय समाज मेंसामाजिक - आर्थिक सशक्तिकरणके सन्दर्भ मेंशिक्षा के प्रति माता-पिताकेदृष्टिकोणकाअध्ययन "

शोध की परिकल्पना :-

परिकल्पना शब्दसे तात्पर्य एक उपकथन से होता है, जो कि किसी समस्या की अवधारणा होती है तथा अनुसन्धानकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है | परिकल्पना में कथन का स्वरुप एक व्याख्याके रूप में होता है, जो की प्राय: सिद्धांत अथवा अवलोकन पर निर्धारित होता है| अनुसन्धानमें जब किसी सिद्धांत कीसमानकों तथा प्रमाण के आधार पर प्रमाणिक की जाती है तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है | सम्पूर्ण अनुसंधानिक क्रियायें निश्चय ही परिकल्पनाओ पर ही निर्भर होती है | परिकल्पना की प्रमाणिकता से ही निष्कर्ष सामने आते है |

"एक परिकल्पना वह बात कहती है, जिसे हम आगेसोचते है | परिकल्पना सदैव आगे को देखती है| यह एक साध्य होती है, जिसकीवैधता हेतु परिक्षण किया जाता है | यह सत्य सिद्ध हो भी सकती है और नहीं भी|"

शोधकर्त्रीनेशोध-कार्य हेतु निम्न लिखित परिकल्पनायें निर्धारित की है |

a. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण (सरकारी व गैर सरकारी) विद्यार्थियोंकीशैक्षिकउपलब्धियोंपर माता-पिता केदृष्टिकोणों (सामाजिक – आर्थिक स्तर) के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

b. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण (सरकारी व गैर सरकारी) विद्यार्थियोंकिशैक्षिकउपलब्धियों पर माता-पिता केदृष्टिकोणों(शैक्षणिक योग्यता) के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

c. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण(सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय) विद्यार्थियोंकिशैक्षिकउपलब्धियों पर माता-पिता केदृष्टिकोणों (शैक्षिकविद्यालयसंप्राप्तिओ) के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

d. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण (सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय) विद्यार्थियोंकिशैक्षिकउपलब्धियोंके मार्ग में आने वाली कठिनाइयोंपर माता-पिता केदृष्टिकोणों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

e. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण(सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय) विद्यार्थियों(छात्र – छात्राओ) कीशैक्षिकउपलब्धियों पर माता-पिता केशैक्षिक, सामाजिकतथा आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव कीतुलना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

f. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरतशहरी व ग्रामीण(सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय) छात्र – छात्राओ कीशैक्षिक,सामाजिक, आर्थिक स्तरानुसार विश्लेषण करने पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है |

6. <u>अध्ययन की आवश्यकता एवम महत्व</u>:-

वर्तमान में माता - पिता के सामने सबसे बड़ी समस्या किशोरावस्था के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बंधित है | बालक की शिक्षाशिक्षकोंतथा माता – पिता के प्रयासएवम्अभिप्रेरणा से प्रभावित होती है लेकिनसामाजिक वआर्थिकस्तरानुसारमाता - पिता की शैक्षणिक योग्यताभूमिका इस क्षेत्र में विशिष्टहै | भारतीय समाज में ये देखा गया है कि परिवार के लोग बालको की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते | अधिकांशपरंपरागतपरिवार में माता - पिता तो अपनी संतानों की फीस, पुस्तकें, कपड़ेएवम्दैनिक व्यय के लिए खर्च देकर ही अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझलेते है | यहाँ तक कि अधिकांश भारतीय विद्यालयों में शिक्षकगण भी केवल कुछ घंटे जैसे - तैसे पाठ्यक्रम को पूरा करवाकर अपने काम की इति श्री मानकर संतुष्ट हो जाते है |

शोधकर्त्री का मानना है कि ग्रामीण एवम शहरी क्षेत्रों में अनेकोंसमस्याओ के कारण माता - पिता बालकोंकी शिक्षा को प्रोत्साहित नहीं कर पाते विद्यार्थीबौधिक एवम्उच्च सामाजिक कुशलता से युक्त होने के बावजूद मार्गदर्शन के अभाव में बांछित शैक्षणिक उपलब्धिओं कि प्राप्ति में पिछड जातेहैं|

परिवार की भागीदारी बच्चे के शैक्षिक परिणामो का सबसे मजबूत कारक है | यह आयाम बच्चो के सीखने के लिए प्रेरणा, ध्यान, कार्यदृढताग्रहणशील शब्दावली कौशल, और कम आचरण समस्यों से काफी जुड़े है| शिक्षा के क्षेत्र में परिवार की भागीदारी युवा बच्चोंकी शिक्षा में एक लाभकारीकारक के रूप में पहचानीगयी है |

प्राय:किशोर(विद्यार्थियों) के प्रति अधिकांश प्रौढ़ व्यक्तिओं का दृष्टिकोण वव्यवहारनिर्मम एवम शुष्क होता है | माता - पिता के उचित सहयोग, सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण, अभिप्रेरणा प्रोत्साहन के अभाव मेंविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिउच्च शैक्षिक महत्वकांक्षाप्रभावित होती है | जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवम् समाज में स्थिति कोप्रभावित करता है |

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इसलिए हुई क्योकि बालको की शिक्षा पर माता – पिताऔपचारिकतौर परपूर्णध्यान नहीं देते |जिससे किशोर बच्चे माध्यमिक स्तर के बाद उच्च माध्यमिक स्तर पर अपने आप को निरुत्साहित व असमंजस की स्थिति में महसूस करते है |

एकबच्चे का जीवन उस समाज से भी बहुत प्रभावित होता है जिसमे वह रहता है | समाज की संस्थाए उसके मस्तिष्क का विकास करती है | उसके शरीर व्यवहार में संतुलन लाती है और उसके व्यक्तित्व समायोजन का विकास करती है किन्तु इन समस्याओं का प्रभाव कुछ सीमा तक ही सीमित रहता है |

दूसरी तरफ बच्चे भी सामाजिक संगठन को प्रभावित करते है और अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं द्वारा उसमेंसुधार लाने की चेष्टा करते है | शिक्षा इस चक्र को सक्रिय करती है बिना शिक्षा के सामाजिक संगठनछिन्न भिन्न हो जाता है और समाज में चारो और उपद्रवहो जाते है |

बालकोंकी उपलब्धिओं कोप्रभावित करने वाले कारक (माता–पिता के दृष्टिकोणद्वारा)

a. अध्ययन की उत्प्रेरणा
b. बालक की जन्मजात मेघा
c. वातावरण
d. माता - पिता का आर्थिक स्तर
e. सामाजिक परिवेश
f. आर्थिक परिवेश
g. परिवार द्वारा बालक जीवन का रूपायन
h. अध्ययन सामग्री की उपलब्धि
i. बच्चो की अध्ययन में रूचि
j. पारिवरिक सदस्यों का अन्तर सम्बन्ध एवम सहयोग
k. बच्चो की संगति

प्रस्तुतअध्ययन में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के माता - पिता केदृष्टिकोण(प्रोत्साहन) का उनकी प्रगति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कियाजावेगा| इसमें उन छात्रछात्राऔको सम्मिलित किया जावेगा जो ग्रामीण एवमशहरीक्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन कर रहे है | इसमें सरकारी एवम गैर सरकारी विद्यालयोंमें अध्ययनरत छात्रछात्राऔ को सम्मिलित कियाजावेगा|

ग्रामीण क्षेत्र के माता - पिता अपने बच्चो की शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत कम जागरूक होते है | शैक्षिकउत्साहवर्धन को तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये तो परिणाम निसंदेह रोचक एवममहत्वपूर्ण साबित होगें | इन सब बातो को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन कीशोधकर्त्रीकोआवश्यकता महसूस हुई और अध्ययन की समस्या का चयन किया गया है |

<u>शोध(समस्या) से संबधित शब्दावली</u> : -

a. **<u>भारतीय समाज में शिक्षा</u>** – भारतीय समाज में जन्मे व पल रहे छात्र/ छात्राओं की शिक्षा जो समाज की दृष्टी से आवश्यक एवम उपयोगी है |

b. **<u>लिंग भेद</u>** – लिंगभेद से तात्पर्य समाज की संरचना संगठन व व्यवस्था में छात्र/ छात्राओं का सभी क्षेत्रों में असमानता का व्यवहार होना लिंगभेद है|

c. **<u>भारतीय समाज</u>** – भारत में रहने वाले ग्रामीण/ शहरी क्षेत्र में जन्मे छात्र/ छात्राओं

व उनके माता - पिता , अभिवावक, रिश्तेदार|

d. **<u>शिक्षा के प्रति जागरूकता</u>** – समाज, कार्य स्थल और परिवार में व्याप्त शोषण व अपनेभविष्य कोउज्ज्वल बनाने, जीविका अर्जन का साधन जुटाने,व अर्थ के प्रति सचेतरहना|

e. **<u>सहिष्णुता</u>**– सहिष्णुता के बल पर व्यक्ति दुसरों के मन को जीतकर जो हासिल होने वाली वस्तु हो वह भी हासिल कर सकता है छात्र/ छात्राएंबहुत कोमल हृदय वाली होती है उन्हें सदैवसहिष्णुता से अपनाना चाहिये |

f. **<u>माता - पिता का आर्थिक स्तर</u>** – शिक्षा, आय, व सम्पति की सम्पन्नता के आधार पर आर्थिक स्तरों (निम्न/ मध्यम/उच्च) काविभाजन |

g. **<u>माता - पिता का सामाजिक स्तर</u>** – परिवार कि समाज में आर्थिक, समाज में पद प्रतिष्ठा एवम शैक्षिक स्तरानुसार(निम्न/ मध्यम/ उच्च) काविभाजन|

h. **<u>शैक्षिक उपलब्धि</u>** – बालकों की योग्यता के अनुसार बालको की शैक्षणिक सम्प्राप्ति का विकास |

i. **<u>माता - पिता का वैचारिक दृष्टिकोण</u>**– शिक्षा देने के परिपेक्ष्य में उनकी सोच व उसी तरह का व्यवहार रखना |

j. **<u>समीक्षात्मक अध्ययन</u>**– लिंगभेद व शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक स्तरानुसार पक्ष / विपक्ष में तर्क के अनुसार विश्लेषण |

<u>शोध परिसीमन</u> :-

शोध को विधिवत सम्पन्न करने के लिए निश्चित प्रक्रिया अपनाई जाती है इसके लिए शोध की समस्या का चयन करने के पश्चात एक क्षेत्र विशेष का चयन किया जाता है जो समग्र का प्रतिनिधित्वकरे |

a. राजस्थान राज्य के बीकानेर जिले के ग्रामीण व शहरी परिक्षेत्र |

b. जनसंख्या की दृष्टि सेबीकानेरशहर तथा पांच गांवों तक सीमित |

(i) जनसंख्या - 1000

(ii) न्यादर्श - 400

c. लिंगभेदानुसार माता-पिता काव्यावहारिक, वैचारिकदृष्टिकोणशिक्षा के सन्दर्भ में किया जावेगा |

d. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियोंकी, सामाजिक-आर्थिक उन्नयन/अवनयन हेतुवास्तविकव्यावहारिक स्थिति (उत्थान या पतन)के कारणों को जानने का अध्ययन कियाजावेगा |

e. शिक्षा एवं उसकेसामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के स्तर के निर्धारण में माता-पिता की शैक्षिक स्थिति(निम्न शिक्षित/उच्च शिक्षित) तथासामाजिक-आर्थिक (निम्न आयवर्ग/उच्च आयवर्ग) स्थितिनुसार अध्ययन कियाजावेगा |

7. संबधितसन्दर्भ साहित्य

प्रस्तावना:-

शोधकर्त्रीकाशोधकरनेसेपूर्वसन्दर्भसाहित्यकाअध्ययनकरनाअतिआवश्यक है| ज्ञानकेविलुप्तभण्डारकेविभिन्नआयामोंमेंअसंख्याशोधकार्यदिनप्रतिदिन अधिग्रहितकियेजातेहै | ज्ञानकेलिएये आवश्यक हैकिपिछलीपीढ़ीकेलियेकियेगयेउल्लेखनीय कार्यआगामीपीढ़ीकेलिये दिशानिर्दिष्टकरेंगे|

सन्दर्भसाहित्यकीपरिभाषा:-

गुडबारएवम्स्केट्सकेअनुसारयोग्यचिकित्सककोऔषधिकेक्षेत्रमेंहुएनवीनतमअन्वेषणोंकेसाथचलनाचाहिएतथाशिक्षाशास्त्रकेविद्यार्थीऔरशोधकर्त्री कोशैक्षिकसूचनाओकेसाधनोंऔरउपयोगीतथानवीनतमसाहित्यसेपरिचितहोनाचाहिए|

सन्दर्भ साहित्य का महत्व :-

a. शोधकर्त्री को सन्दर्भ साहित्य के अध्ययन से ये पता चलता है कि सम्बंधित शोध के क्षेत्र में अब तक कौनसे अध्ययन हुए है | जिससेउसे आगे बढने में सहायता प्राप्त होगी |

b. इसका महत्वपूर्ण कार्य समस्या को परिभाषित करके अवधारणा बनाने, समस्या के सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना |

c. सम्बंधित साहित्य कागहराई से अध्ययन करने पर अनुसंधान कर्ता के ज्ञान कोष में भीवृद्धि होती है |

d. यह सिद्धांतों केस्पष्टीकरण व पुन: परिभाषित करने में सहायक है |

<u>सन्दर्भ साहित्य का लाभ</u>:-

ज्ञानकेक्षेत्रमेंविस्तारकेलियेआवश्यकहैकिअनुसन्धानकर्ताकोयहज्ञातहोकिज्ञानकीवर्तमान सीमाकहाँपरहै| वर्तमानज्ञानकीजानकारीसाहित्यकेगहनअध्ययनसेहीहोसकतीहै|

पूर्वअनुसंधानोंकेअध्ययनसेअन्यसंबंधितनवीनसमस्याओकापतालगताहै|

शोधकर्त्री

नेउपर्युक्तआधारोंकीसन्दर्भसाहित्यद्वाराजानकारीप्राप्तकरअपनेशोधकार्यकेलियेसहीदिशा निर्देशनिर्धारणकरनेकाप्रयासकियाजावेगा|

<u>सन्दर्भ साहित्य काउद्देश्य</u> :-

शोधअध्ययनोंमेंजहाँउपलब्धउपकरणोंतथानवीनस्वनिर्मितउपकरणोंकाउपयोगतथादत्तसंकलनकाकार्यहोताहै|

वहीसमस्यासेसंबधितसंपूर्णसाहित्यकाअध्ययनअनुसन्धानकाप्राथमिकआधारहैतथाअनुसन्धानकेगुणात्मकस्तरकेनिर्धारणमेंएकमहत्वपूर्णकारकहै|

<u>सम्बंधित साहित्य कापुनरावलोकन</u> :-

शोध प्रक्रिया सम्बंधित साहित्य का अध्ययन एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है क्योकि मानव अपने अतीत में सिंचित और अधोलिखित ज्ञान के आधार पर हीनवीनज्ञान का सृजन करता है |

सम्बंधित साहित्य कापुनरावलोकन अनुसंधान कर्ताको अपने विशेष क्षेत्र काविशेष ज्ञान देता है साथ ही अध्ययन को वैज्ञानिक पद्धति पर अग्रसर करने में मदद करता है |

“सम्बंधित साहित्य सेतात्पर्यअनुसंधान कीसमस्या से सम्बंधित सभी प्रकार की पुस्तके, ज्ञान कोषों, पत्र –पत्रिकाओमें प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंधो तथा अभिलेखों आदि से है | जिनके अध्ययन सेअनुसंधान कर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओ के

निर्माण,अध्ययन कीरूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है|

- वाल्टेसर अलबर्ग

<u>देश विदेश के शोध</u> :-

आहलुवालिया आई (1980) नेशैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन |

निष्कर्षपिता की शैक्षिक योग्यता का बालक की उपलब्धि व शैक्षिक संपादन की उपलब्धि अभी प्रेरणा पर सीधा प्रभाव पाया गया जबकि माता की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पाया गया | तथा मातापिता की आर्थिक स्तर एवम लिंगभेद उपलब्धि अभिप्रेरणा का कोई प्रभाव नहीं पाया गया |

चैन(1989) ने कश्मीर की महिलाओं पर शिक्षा के क्षेत्र में अपना शोध कार्य किया |
निष्कर्ष अपने शोध कार्य में यह निष्कर्ष निकाला कीशिक्षा केवल उच्च कुलीन जाति के लिए हैनिम्न जाति की महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई होती है क्योकि उसका कारण गरीबी व जल्दी शादी होना था |

लुकासहेन्ज़ेएवं डोनाता (1990) नेबालको की उच्च शिक्षा के क्षेत्र मेंमाता-पिता की भूमिका पर अपना शोध कार्य किया |

निष्कर्ष अपनी शोध द्वारा यह निष्कर्ष पाया की स्कूल में छात्रों की शिक्षा में माता-पिता की केन्द्रीय भूमिका होती है | केलिफोर्नियाव एरिज़ोना में 6 उच्च विद्यालयों में से एक अध्ययन से यह देखा की माता-पिता का सक्रिय होना बालको की संख्या को प्रभावित करता है इस सक्रिय भागीदारी को बढावा देने के लिए समाचार पत्र, माता-पिता सलाहकार समितियाँ, विद्यार्थी अभिभावक शिक्षक सम्मेलनों आदि के माध्यम से किशोरों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है | जिसमे माता-पिता की सक्रिय भूमिका का होना आवश्यक है |

औझा एच के (1991) नेपारिवरिक व्यवहार एवम सामाजिक आर्थिक भिन्नता तथा शैक्षिक अभीप्रेरणा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन |

निष्कर्ष माता के प्यार तथा पिता की आज्ञा काशैक्षिक अभीप्रेरणा सेप्रत्यक्ष सम्बन्ध पाया गया | स्वतंत्रता के लिए प्रोत्साहन का बच्चो के शैक्षिक अभीप्रेरणा परसीधा प्रभाव नहीं पाया गया |

सेन(1992) नेशिक्षाके क्षेत्र में सांस्कृतिक कारको एवं कारणोंका योगदान पर अपना शोध कार्य किया |

निष्कर्ष हिन्दू मुस्लिम समुदाय के बालको पर कई सांस्कृतिक कारकोएवं कारणों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला की अनुसूचित जाति कीलड़कियाँ ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरो में अधिक स्कूल जाती है जोमातायें कम उम्र की थी तथा जिनके बच्चों की संख्या कम थी अपेक्षाकृत वे अपने बच्चों को गांवों मेंही शिक्षित करना चाहती थी |

दुग्गल(1992) नेबालिका शिक्षा में भौतिक सुख सुविधाएं एवं संसाधनों का योग दान पर अपना शोध किया |

निष्कर्ष प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा राज्य केबालिकाओं पर अपना शोधकार्य किया और उसने कुछ निश्चित विधालयो के नमूने लेकर सूक्ष्म अध्ययन किया और पाया की वहाँ पर भौतिक सुविधाएँ अपर्याप्तथीएवं उनका उपयोग भी कम किया जाता है जिससे निष्कर्ष निकला की बालिकाओं की शिक्षा के लिए संसाधनोंकी कमी थी | जिससे वे शिक्षा का लाभ उठाने में असक्षम रही |

प्रकाशलता (1993)नेपरिवारिक पृष्ठभूमि व व्यवसायिक चयन के बीच सम्बन्ध का अध्ययनकिया|

निष्कर्षनिम्न पारिवरिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी कुछ सीमा तक अपने परिवार की आर्थिक स्थिति वआकार को दृष्टिगत रखते हुए विषय का चयन करते है | जबकिउच्चपारिवरिक पृष्ठभूमि के सम्बन्धमें यह स्थिति प्रतिकूल रही | मध्यम पारिवरिक पृष्ठभूमि केविद्यार्थियों द्वारा व्यवसाय व विषय चयन अपनी अपनी योग्यता रूचि व क्षमता के अनुसार किया जाता है | विषय चयन में पारिवरिक कारणों की अपेक्षा व्यक्तिगत कारणों को सर्वोपरिमहत्व दिया गया है |

राजेश गहलोत (1994) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को व्यवसायिक रुचिओ के आधार पर विषय चयन व अभिभावको की उनके सम्बन्ध में आकांशाओ का अध्ययन किया

निष्कर्षछात्रों के विपरीत छात्राओं के विषय में निष्कर्ष विपरीत रहे |

राय(1997) ने पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन किया |
निष्कर्षप्रत्येकछात्रा कीशैक्षिक आकांशा व व्यवसायिक आकांशा के मध्य सम्ब्ध था |
प्रत्येक छात्र की अभिभावकीय निर्देशन वशैक्षिक आकांशा में सकारात्मक व उच्च सम्ब्ध पाया गया |

गुप्ता आर एस (1999) ने मनोवैज्ञानिक दबाव एवम अभीप्रेरणा के बीच सकारात्मक सम्ब्ध पर अध्ययन |

निष्कर्षमनोवैज्ञानिक दबावका विद्यार्थियों कीअभीप्रेरणा पर प्रभाव पड़ता है |

बासु दास एवं दत्ता (2003) नेवेतन भोगी परिवार एवं निजी व्यवसायिक परिवार के माता-पिता का बालको के शिक्षा प्रति सोच पर अपना शोध किया |

निष्कर्ष जो वेतनभोगी परिवारों के माता-पिता है वे अपने बच्चों को शिक्षा देना चाहते हैदूसरी तरफ कृषि पर निर्भरपरिवार व व्यवसाय पर निर्भर परिवार अर्थात जिनका स्वतंत्र रोजगार है वे अपेक्षाकृत अपनेबच्चों कोअपने रोजगार के साथ जोड़ना चाहते व शिक्षा को कम महत्व देते है |

स्मिट्स मुल्डर हूइमेइजेर (2003) ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए कामकाजी माताओं की भूमिका के महत्व पर शोध किया |

निष्कर्ष कामकाजी माताओं का परिवार की सकल आय में योगदान होने के कारण वे बेटियों की शिक्षा पर अवश्यजोर देती है | जो महिलायें कामकाजी नहीं होती है और गरीब होती है वो अपनी गरीबी के कारण घरेलू कार्य में हीअपनी बेटी कोलगाये रखती है ऐसी बालिकाओं की स्कूल जाने की संभावना कम होती है |

ब्लांका औरपोलोविना नाडा ने (2007) ने माता-पिता के शैक्षिक सांस्कृतिक वव्यवहार का बच्चो की शिक्षा पर प्रभावके पर शोध किया |

निष्कर्षमें बच्चो की शिक्षा प्राप्ति में उनके माता-पिता के शैक्षिक सांस्कृतिक व व्यावहारिक का प्रभाव उनके बच्चो की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई |

हिस्मन,रानी, एवं स्मिथस (2010)नेसामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों की भूमिका का अध्ययन पर शोध किया |

निष्कर्ष यहाँ नमूने के लिए भारत के 26 राज्यों के 439जिलोसे70000 बच्चों का गठन किया| और परिणाम ये देखा कि लगभग 70% के आसपास बदलाव के लिए सामाजिक आर्थिक कारक सबसे महत्वपूर्ण होते है इन्ही कारको के कारण ग्रामीण क्षेत्र के बालको की अपेक्षाये बालिकाएं वंचित रह जाती है |

8. शोध विधि उपकरण एवं प्रक्रिया

<u>प्रस्तावना</u>:-

किसीभीशोधकेलिएसमस्याकेचयनएवम्परिकल्पनानिर्माणकेपश्चात्अनुसन्धानकर्ताओकेस मक्षयहसमस्याहोतीहैकिवहपरिकल्पनाओकिसार्थकताकिजाँचकेलियेआंकड़ोकासंग्रहकिस प्रविधि वउपकरणसेकरे| इसअवस्थामेंशोधकर्त्री द्वाराउपकरणोंकाविश्लेषणकरनेकेबादउपयुक्तउपकरणकोचुनलियाजावेगा|

<u>शोध विधि</u>:-

शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षण विधि अनुसंधान का एक अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग रहा है | सर्वेक्षण विधि का अर्थ है ऐसी अनुसंधान प्रणाली से होता है जिसमे अनुसंधानकर्ता स्वयं स्थल पर जाकर मिली विशेष घटना का वैज्ञानिक निरीक्षण करता है |

<u>प्रस्तुतशोधमेंप्रयुक्तविधियाँ</u>:-

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखितविधियों का उपयोग कियाजावेगा: -

a. सर्वेक्षण विधि :- सर्वेक्षण विधि सेस्वंय स्थल पर जा कर सुचना एकत्रित की जायेगी

b. प्रयोगात्मक विधि :- प्रयोगात्मक बिधि से स्व: निर्मितमापनी का प्रयोग करके सुचना/ आंकडेजो की शोध के भविष्योंनुमुखी उद्देश्यों, निष्कर्षो को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेंगे |

शोधउपकरण:-

शोध कार्य में दत्तो का संगठन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है इन्हींसाधनों को उपकरण कहा जाता है | उपकरणों की विश्वनीयता एवं वैधता के आधार पर दत्तो की उपयोगिता निर्भर करती है |

जे. डब्ल्यू वेस्ट के शब्दों में : "बढ़ई के संदूक के औजारों की भांति प्रत्येकशोध उपकरण विशिष्ट परिस्तिथिओं में उपयुक्त होता है |"

शोधकार्य में दत्तो के संकलन के लिए मानकीकृत व स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया जाता है|प्रस्तुतशोध कार्य मेंशोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित "बालिका शिक्षा के प्रति माता-पिता केव्यावहारिक वैचारिकदृष्टिकोण मापनी" उपकरण का उपयोग किया जावेगा |

उपरोक्त शोध कार्य में औपचारिक एवं अनौपचारिकशिक्षण विधियों को प्रयुक्त किया जावेगा |

a. औपचारिक विधि : 1. साक्षात्कार 2. उपकरण/प्रमापनी |

b. अनौपचारिक विधि: समाचार पत्र, पत्र पत्रिकाये, श्रव्य द्रश्य साधन, दूरदर्शन, वेबआदि प्रस्तुत शोध में जो स्वनिर्मित उपकरण उपयोग में लिया जावेगा कल आज और कल के सामाजिक परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए उपकरण के आयामों को निश्चित किया जावेगा

न्यादर्श:-

कुछदेखकरयापरीक्षणकरसबकेबारेमेंअनुमानलगादेनेकिविधिकोन्यादर्श कहतेहै|न्यादर्श समष्टिसेचुनीहुईकुछऐसीइकाइयोंकासमूहहैजोपुरेइकाईसमूहकाप्रतिनिधित्वकरताहै| यहसमष्टि सेछोटेहोतेहुएभीसमष्टि केसभीगुणोंकोसमाविष्ट करताहै| व्यावहारिकतथासामाजिकविषयोंकेशोधकार्यमेंन्यादर्शकामहत्वहोताहै |उसकेबिनाशोधकार्योंकोपूरानहींकियाजासकताहै| न्यादर्शप्रविधिशोधकार्यकोव्यावहारिकतथासमय, धनशक्तिकिद्रष्टिसेमितव्ययीबनादेतीहै| अनुसन्धानतथाशोधकेप्रारूप वनिष्कर्षोंकासामान्यीकरण न्यादर्श के आकारतथाउसकीप्रविधिपरनिर्भरकरताहै|

शोध में प्रयुक्त सांख्यकी विवरण:-

शोधकर्त्रीदवारा शोध प्रबन्ध के निष्पादन एवं प्राप्त फलको में विश्लेषण करने हेतु निम्नाकितसांख्यकी का प्रयोग किया गया है |

a. **मध्यमान**M = $\frac{\sum x}{N}$

b. **प्रमाप विचलन**: - प्रमाप विचलन विचलनशीलता का सबसे स्थाई एवंविश्वसनीय माप है|

$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum d2}{N}}$$

c. **मध्यमान के बीच अंतर की सार्थकता** :-

किसी न्यायदर्श की दो विशेषताओं के बीच सार्थक अंतर है अथवा नहीं इसकी जाँच करने के लिए उस अंतर का "टी" मूल्यज्ञात किया जाता है | इसके लिए शून्य परिकल्पना को आधार मानते हुए कि इन दोनों गुणों में कोई अंतर नहीं है फिर सूत्र द्वारा संभावित त्रुटी ज्ञात की जाती है | इसप्रकार जो संख्या आती है उसकामिलान पुस्तक के परिशिस्ट में दी गयी "टी" मान सारणी में 0.05 व 0.01 स्तर पर मानो से मिलकर दस अंतर की सार्थकता की जाँच की जाती है :

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

<u>उपसंहार</u>:-

अनुसन्धान कत्री द्वारा अनुसन्धान में अपनाई गई विधि एवं उपकरण का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा| प्रस्तुत अध्याय में सर्वेषण प्रक्रिया द्वारा सर्वेषण विधि का उपयोग किया जायेगा|

<u>प्रदत्तो की व्याख्या, विश्लेषण एवं निर्वचन</u> :-

प्रत्येक अनुसन्धान विभिन्न चरणों एवं सोपानो से निकला हुआ अपनेउद्देश्यों की और अग्रसर होता है | अत: दत्त संकलन के मूल तक पहुचने का प्रयास किया जायेगा| शोध को अधिक सार्थक बनाने के लिए दत्तो का संकलन व विश्लेषण सावधानी से किया जायेगा|

<u>सारणीयन एवंदत्त विश्लेषण</u> :-

आंकड़ो का संकलन एक महत्वपूर्ण साक्ष्य कार्य है जो शोध कार्य को अच्छी तरह से विश्लेषित करके परिणाम प्रस्तुत करने में सहायक है |दत्तो के विश्लेषण के निष्कर्ष के आधार पर परिकल्पनाओ को सत्यापित करते हुए शोध के उद्देश्यको प्राप्त किया जाता जावेगा|

<u>निष्कर्ष</u>:-प्रस्तुत शोध कार्य में सारणीयन एवं दत्त विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के आधार पर शोध कार्य के पश्चात प्राप्त परिणामों की विवेचना पर आधारित संभावित सुझावो कोमाता-पिता, बालक/ बालिका, समाज/ आम नागरिक के लिए दिए जा सकेगे |

9. **<u>प्रस्तावित शोध-प्रारूप की अनुक्रमणिका</u>**

अध्याय– प्रथम

शोध की पृष्ठभूमि काअध्ययन

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवम महत्व

1.3 शोधकथन

1.4 शोध के उद्देश्य

1.5 शोधकी परिकल्पना

1.6 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या

1.7 शोध का परिसीमन

अध्याय – द्वितीय

सम्बंधित सन्दर्भसाहित्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सन्दर्भ साहित्य – अर्थ व परिभाषा

2.3 सन्दर्भसाहित्य का महत्व

2.4 सन्दर्भसाहित्य का लाभ

2.5 सन्दर्भसाहित्य का उद्देश्य

2.6 सन्दर्भसाहित्य का पुनरावलोकन

2.7 देश-विदेश के शोध-कार्य

अध्याय – तृतीय

शोध विधि उपकरण एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

3.2 शोध विधि

3.3 प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधियाँ

3.4 शोध उपकरण

3.5 न्यायदर्श

3.6 शोधमें प्रयुक्त सांख्यिकी

3.7 उपसंहार

अध्याय- चतुर्थ

प्रदत्तो की व्याख्या, विश्लेषण एवं निर्वचन

4.1 प्रस्तावना

4.2 सारणीयनएवं दत्त विश्लेषण-निर्वचन

अध्याय– पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 शोध की उपादेयता

6.0 सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

7.0 परिशिष्ट

8.0 समयनियोजन

10. **<u>समय नियोजन</u>** :

इस प्रस्तुत शोध कार्य में समय नियोजन निम्न प्रकार से किया जायेगा |

क्र.स.	विवरण	समय नियोजक
1.	सन्दर्भ साहित्य का अध्ययन एवं अवलोकन	4 माह
2.	क्षेत्र अध्ययन (प्रथम चरण)	2 माह
3.	उपकरण निर्माण	4 माह
4.	दत्त संकलन	6 माह
5.	दत्त विश्लेषण	4 माह
6.	शोध ग्रन्थ लेखन, टंकण, प्रूफएवं अंतिम प्रारूप तेयारकरना	2 माह

7.	शोधग्रन्थजिल्दसाजी वजमाकरवाना	2 माह
	कुल माह	24 माह

11. **<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>** :-

a. डॉ. शर्मा आर. ए. - शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया
b. नागरके. एन. - संखियाकी के मूल तत्त्व
c. सिंहबी. डी. - शिक्षा मनोविज्ञान
d. हकीमएस.ए. - मनोविज्ञान शोध विधिया
e. बाजपेयी एस. आर. - सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेषण
f. जॉनडी.बी.(डॉ. शर्मा) - शिक्षा तथा भारतीय समाज
g. वर्मा राजपाल सिंह - शैक्षिक मुल्यांकन
h. धोडियल सचिदानंद एवं पाठक अरविन्द - शैक्षिक अनुसंधान की विधि शास्त्र 1992 राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
i. पाण्डेय डॉ. विमलचंद- भारतवर्ष का सामाजिक इतिहास
j. अस्थाना अग्रवाल विपिन - मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
k. भार्गव डॉ. महेश - आधुनिक मनोवैज्ञानिक परिक्षण एवं मूल्यांकन
l. बुचएम.बी. - I, II, III, volume
m. गुड एंड हट - मेथोड्स ऑफ़ सोशल रिसर्च

परिशिष्ट :-

Outline of the Synopsis approved शोधार्थीके हस्ताक्षर एवम् दिनांक

Dr. (Smt.) Sudesh Sharma (Reader)

Govt. IASE, Bikaner

Signature of the Supervisor with Date

Address : UNIQUE / 411

Kailash Puri, Near Indane Gas Godown

Bikaner – 334 001

Rajasthan